प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विष्वविद्यालय में नववर्ष कार्यक्रम एवं शोध परिषद की चतुर्थ वार्षिक बैठक आयोजित

पंतनगर। 1 जनवरी 2026। विश्वविद्यालय में शोध निदेषालय द्वारा नववर्ष कार्यक्रम एवं विश्वविद्यालय की रिसर्च काउंसिल की चौथी बैठक आज गांधी हाल में आयोजित की गयी। बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर (डा.) मनमोहन सिंह चौहान द्वारा की गयी। इस अवसर पर कुलपति के साथ कुलसचिव डा. दीपा विनय, निदेशक शोध डा. एस.के. वर्मा एवं संयुक्त निदेशक शोध डा. पी.के. सिंह मंचासीन थे।

बैठक को संबोधित करते मुख्य अतिथि कुलपति प्रोफेसर (डा.) मनमोहन सिंह चौहान ने विश्वविद्यालय में अनुसंधान गतिविधियों को और अधिक सशक्त, प्रभावी एवं परिणामोन्मुखी बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शोध न केवल किसानों, कृषि और समाज की समस्याओं के समाधान में सहायक है, बल्कि इससे विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान भी सुदृढ़ होती है। उन्होंने शोध कार्यों को व्यावहारिक उपयोग से जोड़ने तथा तकनीकों के व्यवसायीकरण की दिशा में निरंतर प्रयास करने हेतु सभी से आह्वान किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक शोध डा. एस. के. वर्मा ने वर्ष 2025 के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित अनुसंधान संबंधी प्रमुख उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के शोध केंद्रों पर विभिन्न फसली प्रजातियों से बीज उत्पादन किया गया, जिसके अंतर्गत गेहूं, दलहन एवं तिलहन फसलों के कुल 7540 कुंतल प्रमाणित बीज का उत्पादन हुआ। डा. वर्मा ने बताया कि वर्ष 2025 के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा 190 शोध पत्रों का प्रकाशन किया गया। साथ ही 26 पेटेंट दाखिल किए गए, जिनमें से 2 पेटेंट विश्वविद्यालय को प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय में 7853 लाख रुपये की कुल 320 अनुसंधान परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त 435 लाख रुपये की बायो–एफिकेसी परियोजनाएं भी प्रगति पर हैं। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में 6 रिसर्च स्कूल सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत 1 करोड़ रुपये से अधिक लागत की 5 परियोजनाएं, 50 लाख रुपये से अधिक की 3 परियोजनाएं तथा 20 लाख रुपये से अधिक लागत की अनेक परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं। विश्वविद्यालय द्वारा 3 कृषि तकनीकों का व्यवसायीकरण (कॉमर्शियलाइजेशन) किया गया है तथा 11 एम.ओ.यू विभिन्न संस्थानों के साथ हस्ताक्षरित किए गए हैं। इसके साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा एग्रीकल्चर साइंस कांग्रेस, किसान गोष्ठियों तथा मिलेट्स पर आधारित कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया, जिससे शोध निष्कर्षों को किसानों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। साथ ही अन्वेषण कार्यक्रम की भी सराहना की गयी।

कार्यक्रम में डा. दीपा विनय ने सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सभी को पुरानी बातों को नजरअंदाज करते हुए अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय के शिक्षकों से अपील की कि विद्यार्थियों में तनाव को कम करने के प्रति व्यवहार करें तथा उदार भावना से बच्चों के भविष्य कल्याण करें।

कार्यक्रम के दौरान डा. सुमित चतुर्वेदी, प्राध्यापक एग्रोनॉमी; डा. अर्चना कुशवाहा, प्राध्यापक फूड एण्ड न्यूट्रीशन एवं डा. रविन्द्र कुमार, सहायक प्राध्यापक केमिस्ट्री को शोध एवं शिक्षण में योगदान के लिए डा. राधाकृष्णन बेस्ट टीचर–रिसर्चर अवार्ड–2025 से सम्मानित किया गया तथा विश्वविद्यालय में उत्कृष्ट शोध कार्य करने वाले 64 वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं को भी पुरस्कार वितरित कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन संयुक्त निदेशक शोध डा. अनिल कुमार द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम के अंत में डा. पी. के. सिंह द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। बैठक का समापन विश्वविद्यालय में अनुसंधान को नई दिशा देने, नवाचार को बढ़ावा देने तथा किसान–केंद्रित शोध को प्राथमिकता देने के संकल्प के साथ हुआ। कार्यक्रम में सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशकगण, संकाय सदस्य, वैज्ञानिक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।